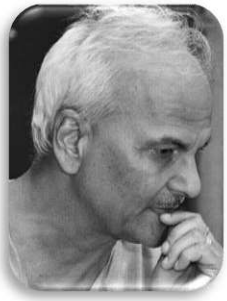

डॉ. रवीन्द्र उपाध्याय

गीत

साधक तिरस्कार-तम में हैं
तिकड़मबाजों का अभिनन्दन!

सीना ताने झूठ चल रहा/सच दुबका-सहमा कोने में
जिसे देखिए वही लगा है/यहाँ स्वार्थ-बीज बोने में
अर्थ कूच कर रहे शब्द से /क्रियाशून्य केवल शब्दांकन!

दूर-दूर तक पेड़ कट गये /रेंड़ भर रही है द्रुम का दम
ईंधन या कि उपस्कर बन गए/बरगद, पीपल, सेमल, शीशम
चन्दन कम होते जाते हैं /सघन हो रहा है बबूल-वन !

दफ्तर घिरा दलालों से है /चौराहों पर रहजन का डर
छल छलकाती राजनीति है/आम आदमी का बस ईश्वर

आफत में है पड़ी शराफत/यहाँ दबंगों का पद-वन्दन !
बगुले का दरबार सजा है/बना राजहंस प्रतिहारी
स्वागत-समारोह कौए का/ कोकिल-बुलबुल बने भारी
हुकुम बजाने में तत्पर हैं /नीलकंठ, मैना, शुक-खंजन !

ग़ज़ल

किससे किसकी यारी है
दुनिया कारोबारी है !

जाल बिछा है, दाने हैं
दुबका वहीं शिकारी है !

मंचों पर जोकर काबिज
प्रहसन क्रमशः जारी है !

बुझे-बुझे खुद्दार लगें
दमक रहा दरबारी है !

सुख तो एक छलावा है
दुख की लम्बी पारी है !

से.नि. प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
बी.आर.ए.बिहार विश्वविद्यालय,मुजफ्फरपुर